उर्दू–उपन्यासों में भारतीय संस्कृति

□ डॉ. ईशरत बी खान

भारत विभिन्न धर्मों, विभिन्न मतों और विभिन्न संस्कृतियों का संगमस्थल रहा है। इतनी विभिन्नता होने पर भी यहां एक ऐसी एकता पाई जाती है जो सारे देश को एक सूत्र में बाँधे हुए है। यदि हम अपने इतिहास पर एक नज़र डालें तो जो भी विदेशी यहाँ आया, वह भारतीय संस्कृति में रच–बस गया। भारत में मुस्लिम साम्राज्य के स्थापित होने के साथ ही हिन्दू–मुसलमानों में सांस्कृतिक और साहित्यिक आदान–प्रदान होने लगा। मुग़ल शासकों और कवियों ने भारतीय धर्म, दर्शन एवं साहित्य का गहराई से अध्ययन किया। इस संबंध में रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं, "दाराशिकोह हिन्दुत्व और हिन्दी साहित्य–दोनों का अगाध प्रेमी था। कहते हैं, उसकी अँगूठी पर नागरी अक्षरों में 'प्रभु' शब्द अंकित रहता था।

उर्दू भाषा में काव्य के साथ ही साथ तेजी से अनेक गद्य विद्याओं का विकास हुआ लेकिन खासतौर से उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं जीवन की जो झांकी प्रस्तुत की गई है, वह बेमिसाल है। भारतीय अध्यात्म एवं दर्शन, उदारता, सहिष्णुता, हिन्दू–मुस्लिम एकता, नारी की महत्ता, लोक संस्कृति (पर्व, त्यौहार, उत्सव, भाषा), भारतीय मिथक और भारतीय संस्कृति के विभिन्न तत्वों को उर्दू उपन्यासों में सफलतापूर्वक उभारा गया है।

भारतीय संस्कृति में अध्यात्म का विशेष महत्व है। भारतीय अध्यात्मवाद के विषय में डॉ. राधाकृष्णनन का कहना है, "मानव की तार्किक प्रवृत्ति से अधिक जोर आध्यात्मिक प्रवृत्ति पर दिया गया है।" जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करना है। इसके भक्ति, ज्ञान, तप, चिन्तन आदि विविध साधन बताए गए हैं। 'आग का दरिया' उपन्यास अपने समय से तो साक्षात्कार करता ही है इसके साथ ही भारतीय संस्कृति की अध्यात्मक एवं दर्शन से भी परिचित कराता है। कुर्रतुल में इस उपन्यास में अध्यात्म–दर्शन के विभिन्न पक्षों पर व्यापक रूप से विचार किया है। 'शरीर की नश्वरता' के संबंध में कुर्रतुल लिखती हैं :– "शरीर और आत्मा दोनों नश्वर हैं। दोनों के इकट्ठा होने से भी कोई शाश्वत अस्तित्व जन्म नहीं लेता। आत्मा शाश्वत नहीं है। मनुष्य/दीपक की तरह बुझ जाता है। केवल घटनाओं और भावों का क्रम शेष रहता है।"

अध्यात्म के साथ ही भारतीय दर्शन का अनुशीलन बड़ी गम्भीरता से किया गया है। दर्शन को सबसे ऊँची विद्या कहा गया है। दर्शन ही किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति

को गौरवान्वित करता है। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि सूफी दर्शन का आधार भारतीय दर्शन ही है। भारतीय दर्शन संबंधी सभी धारणाओं को 'आग का दरिया' उपन्यास में समाविष्ट किया गया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है–"परमात्मा और जीवात्मा में अविद्या के कारण द्वैष है। इसीलिए शब्द और अशब्द दो अलग–अलग ब्रह्म है, शब्द का ध्यान करके ही अशब्द को प्रकट किया जा सकता है।"

उदारता, सहिष्णुता और सहनशीलता भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है। अपनी इसी विशेषता के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति अब तक सजीव बनी हुई है। काजी अब्दुल सत्तार के नाविल 'पहला और आखिरी खत' में इन्सान का इन्सान के प्रति प्रेम तथा धार्मिक सहिष्णुता देखते ही बनती है....। कुराईन ने उन्हे (चौधरी) गले लगा लिया और देर तक खड़ी रहीं फिर बोलीं :– "चौधरी भगवान के लिए अभी न जाओ। मोरा जी हिल रहा। कुराइन के लहज़े में ममता की मिठास थी।"

इलीयास गद्दी के उपन्यास 'फायर एरिया' में हिन्दू–मुस्लिम एकता व प्रेम का सुन्दर अंकन किया गया है। इसी उपन्यास से धार्मिक सहिष्णुता का एक उदाहरण देखिए– "वापसी में सायकिल चलाते हुए सहदेव सोचता रहा.... यह दुआ किसने किसको दी है? एक बाप ने एक बेटे को, या एक मुसलमान ने एक हिन्दू को? मजूमदार कहता है कि ऐसी सीमा है, जहां धर्म अपनी पहचान खो देता है, हर प्रकार का भेदभाव मिट जाता है, खुद की बनाई हुई सारी दीवारें टूट जाती है, खुद की खींची हुई सारी लकीरें मिट जाती हैं।"

भारतीय संस्कृति में नारियों का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय नारी के विभिन्न पहलुओं पर कुर्रतुल के उपन्यास 'आग का दरिया' में विचार किया गया है। यही कारण है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', 'बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः–सर्वे सन्तु निरामयः', 'वसुधैव कुटुम्बकम' तथा 'परोपकार परमो धर्मः' आदि उक्तियां भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र एवं मूलाधार हैं।

भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व लोक–संस्कृति है। इसी में सम्पूर्ण भारत की छवि उभरती है। इसके अन्तर्गत, संस्कार, पर्वोत्सव, विभिन्न ऋतुयें, विभिन्न प्रकार के मनोरंजन, व्यवसाय, लोकगीत, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे आदि आते हैं।

उर्दू उपन्यासकारों ने भारतीय संस्कृति को समग्रता में उभारा है। इसके लिए उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के तीज–त्यौहारों को एक साथ देखा है, चित्रण किया है। भारत में होली, दीवाली, ईद, दशहरा, रक्षाबंधन, राष्ट्रीय त्यौहारों के रूप में मनाये जाने लगे। इन त्यौहारों को सभी धर्मों के लोग मिल–जुलकर धूमधाम से मनाते थे। इससे विभिन्न धर्मों के लोगों को एक दूसरे के करीब आने और समझने का मौका मिलता था। इस अवसर पर मानवीयता, धर्म से कहीं अधिक उच्च स्थान पर पहुँच जाती थी। कुर्रतुल 'अवध शासन' में हिन्दू–मुस्लिम मिलाप का वर्णन इस प्रकार करती हैं "मुहर्रम में बलवे नहीं होते, न मस्जिदों के सामने बाजा बजाया जाता है। हिन्दू ताजियादारी करते हैं और मुसलमान दिवाली मनाते

हैं। कैसा उल्टा जमाना है। नवाब–बहू बेगम हर साल होली मनाने फैजाबाद से अपने बेटे के पास लखनऊ आती है। सारे राज्य में अनगिनत हिन्दू राजाओं ने मस्जिदें और इमामबाड़े बनवा रखे हैं।"

यही मेल–मिलाप अब्दुल सत्तार के नाविल 'शब गज़ीदा' में भी मिलता है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग संगीत एवं नृत्य को इस्मत चुगताई के "टेढ़ी लकीर" और कुर्रतुल के 'आग का दरिया' उपन्यासों में अंकित किया गया है।

हिन्दू देवी–देवता, रामकृष्ण अवतार, असुर, प्राकृतिक उपकरण (सृष्टि–प्रलय, भूकंप–पर्वत, नदी–जल, धूमकेतु–आकाशगंगा, वृक्ष), कर्मकाण्ड (पूजा अनुष्ठान), पशु–पक्षी तथा लोक विश्वास आदि भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग है। उर्दू उपन्यासकारों ने इन सभी तत्वों का विस्तृत रूप से चित्रण किया है। इन उपन्यासकारों ने भारतीय देवी–देवताओं को कहीं सीधे–सीधे अपने उपन्यासों का नायक बनाया है तो कहीं इनका मिथक के रूप में प्रयोग किया है।

कुर्रतुल ऐन हैदर की भारतीय मिथकशास्त्र में गहरी पैठ है। उनके प्रायः सभी उपन्यासों में भारतीय मिथकों का कलात्मक प्रयोग हुआ है। उनका उपन्यास 'आग का दरिया' तो इस बात के लिए मशहूर है ही। "एक लड़की की ज़िन्दगी" (सीताहरण) में भी उन्होंने मिथकों का सहारा लिया है। उपन्यास में राम और बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रसंग और सूत्र अनेकशः बिखरे पड़े है। उपेक्षिता सीता (आधुनिक) की स्थिति यशोधरा की भांति ही है। यहाँ सीता और जमील के बेटे का नाम भी राहुल है। इस उपन्यास में लेखिका ने यशोधरा और बुद्ध के मिथक से, आधुनिक सीता की तुलना कर, उसकी (आधुनिक सीता) नियति और पीड़ा को दर्शाया है। लेखिका के कहने का तात्पर्य है कि यशोधरा की अपेक्षा, आधुनिक सीता का जीवन अधिक दुख भरा है, वहां राहुल तो है जो यशोधरा के जीने का सहारा है। यहाँ सीता जीवन भर अपने बेटे राहुल के लिए तड़पती रहती है। सीता के इसी हृदयगत उद्‌गारों को दर्शाता एक मार्मिक उद्धरण प्रस्तुत है :– "इरफान, मुझे मेरा 'राहुल' चाहिए। अगर आपको मुझसे ज़रा सी भी हमदर्दी है तो ज़मील से मेरा बच्चा वापस दिलवा दीजिए।"

इसी तरह 'रामायण' की सीता, आधुनिक सीता की अपेक्षा अधिक भाग्यशालिनी है। रामायण की सीता को स्थान–स्थान पर आश्रय, प्यार, मदद एवं सहानुभूति तो मिलती है लेकिन आधुनिक सीता तो निराश्रित, असहाय ही भागती रहती है। भटकना ही उसकी नियति बन जाती है। आधुनिक सीता के दर्द को उजागर करता, उपन्यास से एक उदाहरण दृष्टव्य है.... "आप सबकी इत्तला के लिए अर्ज है कि सीता आज की दुनिया के खौफनाक जंगल में खो गई। उस सीता को आज की दुनिया का रावण उड़ाकर ले गया। हज़रात एंग्लो–अमेरिकन साम्राज्य की शिकार दुनिया जिसमें मासूमों को थर्ड डिग्री किया जाता है तो उन्हें कोई हनुमान बचाने नहीं आता।"

इसके अतिरिक्त नमक (इकबाल मज़ीद), पानी (गज़नफर), फरात (हुसैनुल हक), गोदावरी (फहमीदा रियाज), बस्ती (इंतिजार हुसैन), उदास नस्ले (अब्दुल्ला हुसैन) आदि उपन्यासों में भी भारतीय मिथकों का व्यापक रूप से चित्रण किया गया है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उर्दू उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों का अंकन सफलतापूर्वक हुआ है लेकिन कुर्रतुल ऐन हैदर का "आग का दरिया" उपन्यास तो भारतीय संस्कृति का दर्पण कहा जा सकता है। इससे पता चलता है कि उर्दू उपन्यासकारों (भारतीय तथा पाकिस्तानी) में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा ज्ञान, प्रेम एवं रुचि है।

❖ ❖ ❖